(x) पुनर्मूल्यांकन या जरूरत पड़ने पर योजना में बदलाव (reassment and if necessary change in Plan)

परंतु यदि क्लायंट या परामर्शदाता के व्यक्तिगत तथा सांवेगिक समस्याओं के लिए परामर्शन किया जाता है, तो उक्त कदमों या चरणों में थोड़ा अंतर हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में परामर्शन का संपादन इन चरणों या कदमों के अनुसार सामान्यतः होता है —

(i) व्यक्ति द्वारा यह अनुभव किया जाना कि उसे कोई समस्या, शिकायत या लक्षण है (realisation by the client that there is a problem, complaint or symptom)

(ii) समस्या के समाधान में किसी की मदद की जरूरत महसूस करना (feeling the need of help in solution of a problem)

(iii) क्लायंट के साथ संबंध स्थापित करना।

(establishing relationship whith client)

(iv) भावों की अभिव्यक्ति एवं उन्हें अपनी समस्या के साथ जोड़कर विस्तरण करना (expression of feeling and elaborating them by relating to own problems)

(v) व्यक्तिगत संसाधनों तथा भावों की खोजबीन (exploring feeling and personal responses)

(vi) परिवर्तन की वांछित दिशा से अवगत होना (being aware of the change in desired direction)

(vii) अपनी भावों के अनुरूप कार्य करना तथा पुनर्बलन (reinforcement) एवं व्याख्या करके वांछित परिवर्तन को उत्पन्न करना (working through the feeling and introducing the desirable change through interpretation and reinforcement)

Page

(viii) सूझ विकसित करना (developing insight)

(ix) योजनाओं का स्वरूप तय करना (determining the nature of planning)

(x) योजनाओं या क्रियाओं को कार्य रूप देना (executing the plan or actions)

स्पष्ट हुआ कि परामर्शन के मॉडल में अंतर होने से परामर्शन प्रक्रिया के चरणों या अवस्था में थोड़ा अंतर अवश्य हो जाता है। फिर भी परामर्श मनोवैज्ञानिकों के बीच इस बात की सहमति बहुत हद तक है कि परामर्शन प्रक्रिया में सम्मिलित चरण या अवस्थाएँ लगभग एक समान होते हैं। हैकनी तथा कोर्मियर (Hackney & Cormier 1996) ने परामर्शन प्रक्रिया में निम्न चार अवस्थाओं को महत्वपूर्ण बतलाया है:—

(1) क्लायंट परामर्शदाता के बीच संबंध स्थापित करने की अवस्था

(phase of establishing client-counsellor relationship)

(2) समस्या की पहचान एवं खोज की अवस्था (phase of problem identification and exploration)

(3) समस्या समाधान के लिए योजना तैयार करने की अवस्था (phase of solution application, and termination)

(4) समाधान, उपयोग एवं समापन की अवस्था

(phase of solution application and termination)

इन चारों अवस्थाओं का वर्णन निम्न है :—